विद्या भारती संकुल संवाद

सा विद्या या विमुक्तये

फ़रवरी 2023 माघ- फाल्गुन, विक्रमी सं. 2079

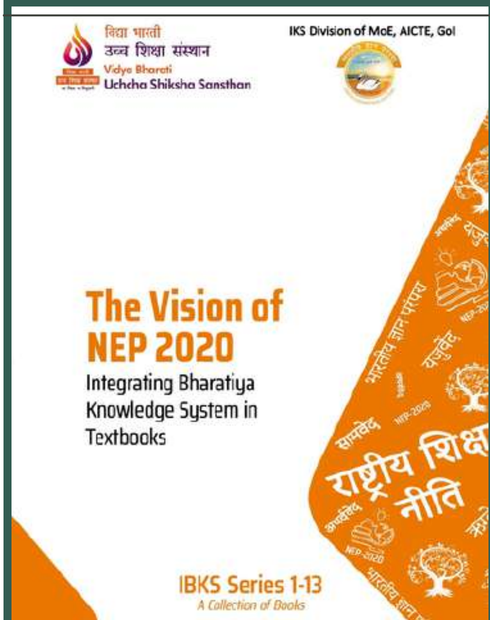

भारत केन्द्रित शिक्षा: 13 पुस्तकों का लोकार्पण

श्री सरस्वती विद्या पीठम के स्वर्णिम जयंती अवसर पर हैदराबाद के बंडला गुड़ा रदा धामम में आयोजित पूर्व छात्र सम्मेलन – दो लाख विद्यार्थियों से सेवा कार्यक्रम का संकल्प

विद्या भारती मध्य भारत प्रांत का पूर्व छात्र समागम 2023

शिक्षा में राष्ट्रीय बोध

हम सरस्वती विद्या मन्दिरों के माध्यम से एक भव्य कार्य में जुटे हैं। इस कार्य की आवश्यकता क्या है? इसको समझ लेना आवश्यक है। अपने राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति हो, इसका पुनरोदय हो यह हमारे मन की आकांक्षा है। किसी भी देश की वास्तविक सम्पत्ति वहाँ की जनशक्ति होती है, मात्र जनसंख्या शक्ति नहीं होती है। यह जनशक्ति शील, चारित्र्य एवं आध्यात्म भाव से अभिमंत्रित होनी चाहिए। हमारे व्यक्तिगत जीवन में इन गुणों का सन्निवेश सदैव रहा है। भारत बहुत पहले से तत्वज्ञान एवं आध्यात्म ज्ञान के लिए विख्यात रहा है, किन्तु राष्ट्रीय बोध के अभाव में हम सदैव पराजित हुए पर थोड़े से मुसलमान व अंग्रेज जो राष्ट्रीयता के प्रसंग पर हमसे आगे थे हम पर विजयी होते रहे। इनका व्यक्तिगत जीवन न तो शीलयुक्त था और न ही आध्यात्म भाव से परिपुष्ट। फिर भी अपनी राष्ट्रीयता के कारण हमारे ऊपर ये शासन करते रहे। बाबर २० घुड़सवारों को लेकर घुसा। कहते हैं हमारे यहाँ की महिलाओं ने इसे भोजन दिया, इसके घोड़ों को चारा दिया।

१८६२ में एक अंग्रेज इतिहासकार के १८ भाषण हुए। इसमें से तीन भाषण इसी विषय पर थे। इस भाषण में कहा गया कि अंग्रेजों ने भारत को जीता, ऐसा ठीक नहीं है। वास्तविकता यह है कि भारतीय सैनिकों ने भारतीय पैसे से स्वयं ही भारत को थाल में रखकर एक व्यापारिक संस्था ईस्ट इंडिया कंपनी के अंग्रेज सैनिकों के हवाले कर दिया।

हम शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय संस्कार देना चाहते हैं। इससे राष्ट्रीय व्यक्तित्व का निर्माण संभव है। आज देश में अनेक विधि समस्याएं उमड़ का काम होगा, चराचर जगत में भगवान सर्वत्र रही हैं। ये समस्याएँ चुनौती के रूप में खड़ी है, व्याप्त है। हम सभी उस परमात्मा के अंश है फिर हमारे बालक इन चुनौतियों का प्रभावी रूप से सामना करने वाले बने यही अपेक्षा है।

किसी भी देश की उन्नति वहाँ के समाज के विद्वानों तथा बाह्य आर्थिक सहायता पर नहीं अपितु व्यक्ति में राष्ट्रीय बोध, संगठन एवं अनुशासन के प्रखर भाव पर निर्भर करती है। इन तीन गुणों के कारण ही कोई देश ऊँचा उठता है। इन तीन गुणों का उद्भव श्रद्धा से होता है। श्रद्धा का प्रथम केन्द्र बिन्दु है भगवान के प्रति अटूट श्रद्धा।

भगवान के प्रति अटूट श्रद्धा

दुर्भाग्य कि हमारे पाठ्यक्रम इस दृष्टि को लेकर नहीं बने। विद्यालय मंदिर के समान संस्कारक्षम होने चाहिये। मंदिर से श्रद्धा का भाव जगता है। विद्यालय की बागवानी से एक भी पुष्प व फल तोड़ना अच्छा नहीं, यह मानव व्यवहार मंदिर के प्रति श्रद्धाभाव जागृत करने से आयेगा। महाराष्ट्र के एक ग्राम का उदाहरण- विद्यालय छात्रावास के पड़ोस में सैकड़ों वृक्षों से युक्त एक विशाल वाटिका, इसका कोई रक्षक नहीं फिर भी कोई नहीं तोड़ता।

यहाँ पुलिस स्टेशन नहीं, क्योंकि इसकी कोई आवश्यकता नहीं, कोई पुलिस थाने नहीं जाता। कारण क्या? इस ग्राम में एक भव्य मंदिर है। वहीं के लोगों को यह संस्कार इस मंदिर से इसके अंदर प्रतिष्ठित परमात्मा की मूर्ति से मिले। हमारे विद्यालयों का संपूर्ण वातावरण मंदिरमय होना चाहिए।

श्रद्धा जागरण से ही जीवन में गुण सम्पदा निर्माण होती है इस हेतु हमें प्रयोग करने होंगे। अवसर मिलने पर भगवान से क्या वर मांगोगे? बालक का उत्तर था कि भगवान मुझे ही तुम भगवान बना दो। गहराई में जाकर श्रद्धा जगाने छूआछूत क्यों? परमात्मा तो भक्ति को पहचानता है।

विजय नगर साम्राज्य के रामकृष्ण देवराय के गुरु व्यासराय के शिष्य कनकदास शूद्र थे। इनके गुरु इन्हें अतिशय प्रेम करते थे। अन्य शिष्यों को ईर्ष्या होने लगी। अतः एक दिन गुरु ने सभी शिष्यों से कह जहाँ कोई न देखे वहाँ वह केला खाकर आओ। सभी केला खाकर आ गये। परन्तु कनकदास केला हाथ में ही लिये रह गये वे खा न सके। पूछने पर कनकदास ने बताया कि जो भगवान रात दिन सब बनाता है, वह तो सभी को देखने वाला है। वह जब सर्वव्याप्त है तो उससे बचाकर केला कैसे खा सकता हूँ। सभी शिष्यों को समाधान हो गया कि उन पर गुरुका इतना प्रेम क्यों है? परमात्मा के प्रति यह भाव जागृत करना होगा।

यह कथा सुना रहे थे एक महात्मा, जिन्हें कर्नाटक सरकार की ओर से प्रवास करने की सुविधा थी। लोगों में नैतिकता व देशभक्ति का भाव जागृत करने के लिए शासन ने इन्हें इस काम में लगाया था। कनकदास की कथा सुनाते समय कर्नाटक प्रांत के एक मंत्री भी वहाँ उपस्थित थे।

महात्मा ने कथा का अंत करते हुए कहा कि इसी प्रकार का भगवान के प्रति सर्वव्यापकता के भाव का स्मरण रखकर शासन के मंत्री महानुभावों को व्यवहार करना चाहिए। मंत्री महोदय ने बाद में नाराज होकर उस महात्माका सरकारी प्रवास समाप्त करवा दिया।

जारी ...

मातृभूमि के प्रति श्रद्धा

भारत के संविधान में कहा गया है कि भारत एक संघीय राज्य है, राज्य इकाई से बना है। संपूर्ण देश जोड़ने वाली यह बात नहीं है। ऐसी बातों से देश व राष्ट्र के प्रति श्रद्धा उत्पन्न नहीं की जा सकती है। राजनैतिक और आर्थिक अधिकारों की माँग का उल्लेख हो सकता है। मौलिक रूप में अपनी मातृभूमि के प्रति श्रद्धा जाग्रत करनी होगी हमारा देश भारत माता है। विधान द्वारा परिभाषित केवल राज्यों का संघ नहीं है। इसलिए प्राकृतिक संसाधनों के दोहन अथवा परिपोषण का तुच्छ विचार नहीं उठता है। हमारा भाग है माता की दृष्टि से प्रकृति की अर्चना का यह गौमाता की सादर सेवा करके दूध को उसके प्रसाद के रूप में ग्रहण करने की वृत्ति के समतुल्य है।

हमारी प्रेरणा भारत माता है. राजनीति नहीं। राजनीति से देश के लिए समर्पण भाव का जागरण नहीं हो सकता है। क्रांतिकारियों के बलिदानी जीवन के लिए वंदे मातरम् शब्द ही प्रेरणा देता रहा। भारतीय स्वातंत्र्य की लड़ाई में वंदेमातरम् गीत मातृभूमि के प्रति श्रद्धा जगाता था। यह स्वातंत्र्य संघर्ष भारत को माँ मान कर लड़ा गया। अपने प्राणों का मोह न करते हुए राष्ट्र सेवा के लिए सदैव तत्पर रहना इसी प्रेरणा से संभव हुआ। क्रांतिकारियों ने अपने एक हाथ में गीता लेकर दूसरे हाथ से फाँसी का फन्दा अपने गले में हँसते-हँसते डाल लिया। इस अन्तस्थ प्रेरणा के कारण गीता का सारतत्व उन्हें उस समय भी स्मरण रहा। कि मुझे अर्थात आत्मा को कोई मार नहीं सकता। मुझे कोई प्रेरणा से ओत-प्रोत कवि ने इसे (त्व) हि दुर्गा शब्द से संबोधित किया। स्वामी रामतीर्थ तो मानों भारत माँ के साथ एकरूप हो गये। मैं ही भारत हूँ। मैं ही शंकर हूँ। मेरे श्वांस में भारत माता का अनुदित स्तवन हो।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने देश भुवन मन मोहिनी अर्थात इसे तीनों रूप में गुणगान किया है। स्त्री समाज में हमने माँ के रूप का दर्शन किया है। माँ स्वरूप हैं यहाँ की नदियाँ, गौ, तुलसी, वृक्ष, वनस्पति। वस्तुतः जीवन की समग्र दृष्टि एकात्म थी। हम निखिल ब्रह्माण्ड में एक सर्वव्यापी परमतत्व का दर्शन करते हैं। मानव उसका अखंड अविभाज्य अंग है। इस कारण प्रत्येक प्राणी का, जिनमें वनस्थान भी सम्मिलित है, उसके साथ जीवमान बन्धुत्व का नाता है। इसीलिए पशु-पक्षी, वृक्ष हमारी दृष्टि से दिव्यता संपन्न है। यही नहीं तथाकथित जड़ पदार्थ जैसे पत्थर, पंक अथवा जल भी हमारे लिए पवित्र है हमारी यही दृष्टि सरिताओं को पवित्र और पृथ्वी को श्रद्धामयी माता बनाती है।

श्रद्धा का भाव मातृभूमि के प्रति जगने पर माँ के शरीर के टुकड़े करना कैसे संभव है?

ऐसी श्रद्धा जगानी होगी माँ के प्रति हमें अपने विद्यालयों में, माँ के इस श्रद्धा सुगंध को सर्वदूर फैलाना होगा। माता की यह दृष्टि हमें अपने परिवारों से प्राप्त होती है। परिवार से ही भारतीय संस्कृति का स्रोत प्रारंभ होता है। विदेशों में इस पारिवारिक प्रेम का अभाव है। परिवार टूट रहे हैं। आत्मीयता के लिए लोग अशांत मारे मारे फिर रहे हैं। बंगलौर की एक महिला अमरीका गयी। वहाँ की एक महिला का कथन था कि आप धन्य हैं, क्योंकि आप भारतीय माँ है। हमारे पास लाखों डालर, विपुल सम्पदा है फिर भी हम न तो सुखी है और न ही आपके समान आदराधिष्ठित।

श्रद्धा के पीछे अतीव गहरा चिन्तन व मनन छिपा है। अपनी शिक्षा की दो आँखें हैं। (१) श्रद्धा और (२) ज्ञान।

श्रद्धा

तत्वज्ञान देने से पहले पवित्र श्रद्धा का बीज बोना आवश्यक है। 'श्रद्धावान लभते ज्ञानं' ये श्रद्धा भारतीय जीवन मूल्यों के प्रति उत्पन्न करनी है। पाश्चात्य देशों में विकास के अनेक उदाहरण स्मरणीय है। इंग्लैंड में शिक्षण पद्धति के माध्यम से बुद्धि (दक्षता, सामान्य ज्ञान, व्यवहार आदि) का प्रचण्ड विकास बहुत तेसे हुआ है। परन्तु हृदयों को शुष्क बना दिया है। शून्यवत् जीवन हो गया है। ज्ञान के साथ श्रद्धा आवश्यक है। अतः ज्ञान देने का कार्य तो पूर्ण कुशलता से करना है। छात्रों को इसके लिए प्रोत्साहित करना होगा। छात्र भी प्रश्न करें ऐसा वातावरण बनाना होगा। साथ ही श्रद्धा भी निर्माण करनी होगी। हमको श्रद्धा व ज्ञान का समन्वय करना होगा। एक उदाहरण 5-6 वर्ष की एक बच्ची थी। उसने एक पतंगे की टांग को धागे से बाँध दिया। जब पतंगा छूटना चाहता, तो बच्ची उसे खींच लेती थी। इस काम में उसे आनंद आ रहा था। मैंने कहा कि यदि तुम्हें ऐसे ही बाँध दिय जाये, तो कैसा लगेगा? मेरी बात सुनकर यह रो पड़ी और पतंगे को छोड़ दिया। हमें सामान्य बच्चों को समझाने का तरीका खोजना होगा।

ज्ञान

प्रश्नोत्तर विधि से बालक के ज्ञान को गहन व स्थायी बनाना होगा। एक दिन यात्रा में मैंने एक किशोर से, जो मेरी ही बस में मेरी सीट के बगल में बैठा था परिचय के क्रम में इससे पूछ लिया, इंटरसाइस से क्यों पढ़ रहे हो? इंजीनियर बनने के लिए। इंजीनियर क्यों बनना है? पैसा कमाने के लिए। पैसा किस लिए? अच्छा जीवन चलाना चाहता हूँ। परन्तु मेरे प्रश्नों से थोड़ी देर में वह निरुत्तर हो पड़ा कि मेरे पितास्वयं एक हाईस्कूल में प्रधानाचार्य हैं। उन्होंने भी कभी मुझसे ऐसे प्रश्न नहीं किये थे।

बालक को आज टटोलने की आवश्यकता है। उसके मन को जगाने की जरूरत है परन्तु ध्यान रहे बालकों से प्रश्न पूछने के आग्रह के साथ-साथ अपना भी ज्ञान बढ़ाते रहना चाहिए। हमारी स्वयं की अच्छी तैयारी होनी चाहिए।

इतिहास शिक्षण के समय हम प्रश्न करें कि हमारी संस्कृति श्रेष्ठ, जनसंख्या में अधिक, सभी प्रकार की सम्पन्नता फिर भी हम गुलाम क्यों हुए? अच्छा तत्वज्ञान होते हुए भी हम दूसरों के अधीन क्यों रहे? इन प्रश्नों के अंदर ही आत्मा जागेगी। सब प्रकार की उत्सुकता और कोतुहल जागृत करना होगा। छात्र इन मूलभूत प्रश्नों का वास्तविक उत्तर एवं समाधान स्वयं ढूँढ सकें।

हमें राष्ट्रीय शिक्षा, राष्ट्रीय दृष्टिकोण के कुछ नमूने खड़े करने पड़ेंगे। हमारे यहाँ के छात्र समाज के सामने उदाहरण बनें। हमारी संख्या हमारे छात्रों की संख्या, विद्यालयों की संख्या कम हो सकती है किन्तु इनमें से ही हम समाज को नेतृत्व प्रदान करने वाले छात्र निर्माण करें।

- हो० वे० शेषाद्रि
(राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सरकार्यवाह)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं जीवन मूल्य पर व्याख्यान का आयोजन

उज्जैन।सम्राट विक्रमादित्य भवन विद्या भारती मालवा, उज्जैन में विद्वत परिषद मालवा के तत्वावधान में 13 फरवरी को अखिल भारतीय शिक्षा नीति एवं जीवन मूल्य विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में विद्या भारती के अखिल भारतीय महामंत्री श्री अवनीश भटनागर ने विचार रखे। इस अवसर पर विद्या भारती मालवा के प्रांतीय संगठन मंत्री श्री अखिलेश मिश्रा, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य श्री विजय कुमार, सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान मालवा के उपाध्यक्ष श्री तरुण शाह एवं विद्या भारती मालवा के पूर्व छात्र संघ के प्रांतीय संयोजक अनुराग जैन उपस्थित रहे।

संवाद केंद्र का उद्घाटन :- विद्या भारती के अखिल भारतीय महामंत्री अवनीश भटनागर ने सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान "प्रज्ञादीप" भोपाल में विद्या भारती मध्य भारत प्रांत के "संवाद केंद्र" का उद्घाटन किया।

विद्यालय प्रबंधन पर कार्यशाला का आयोजन

उज्जैन। विद्या भारती मालवा प्रांत के प्रशिक्षण, शैक्षिक अनुसंधान केन्द्र एवं प्रांतीय कार्यालय "सम्राट विक्रमादित्य भवन" में विद्यालय सचिवों के लिए विद्यालय प्रबंधन पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 12 से 14 फरवरी तक किया गया।

कार्यशाला में विद्या भारती मालवा द्वारा मार्गदर्शित सरस्वती विद्या मंदिरों की संचालन समितियों के सचिव सम्मिलित रहे। इस दौरान विशेष रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के अनुसार विद्यालय संचालन में भूमिका, ICT एवं वोकेशन एजूकेशन, विद्यालय का विकास, विजन-2025, आर्थिक नियोजन, शिक्षक कल्याणकारी योजना, हमारी संकल्पना, व्यवहार, संवाद आदि को सीखने/समझने का अवसर मिला।

मालवा प्रांत के सचिव प्रकाश धनगर जी ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार सभी विद्यालय अपग्रेड हो और इस दृष्टि से विद्यालय प्रबंधन को नई दिशा मिले, इस बारे में उपयोगी जानकारी दी गई।

उज्जैन | सम्राट विक्रमादित्य भवन- विद्याभारती मालवा में प्रवास के अवसर पर विद्या भारती के अखिल भारतीय महामंत्री श्री अवनीश भटनागर की पत्रकार वार्ता

प्लैनेट स्कूल डिजिटल इकोसिस्टम

उत्तराखंड। प्लैनेट स्कूल का उद्देश्य वंचित वर्गों के लिए प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा मंच उपलब्ध कराना है, जिसमें विभिन्न सरकारी और सार्वजनिक शैक्षणिक संस्थान और छात्र शामिल हैं, विशेष रूप से उत्तराखंड और देश के दूरस्थ व गरीब क्षेत्रों में। लक्ष्य: शिक्षा प्रणाली के सामने चुनौती छात्रों के लिए शिक्षा को आर्थिक अवसरों में परिवर्तित करना है। प्लैनेट स्कूल का डिजिटल समाधान शिक्षा के प्रबंधन के साथ डिजिटल आर्थिक समावेशन के लिए समान डिजिटल प्लेटफॉर्म प्रदान कर इस समस्या के समाधान का प्रयास करेगा। डिजिटल शिक्षा प्रणाली: उत्तराखंड के लिए 'प्लैनेट स्कूल डिजिटल इकोसिस्टम' को लागू करना। एमएचआरडी द्वारा 2016 में यूनेस्को आईसीटी पुरस्कार के लिए नामांकित। शिक्षा विभाग, उत्तराखंड सरकार के साथ पूरे राज्य के लिए निःशुल्क डिजिटल प्लेटफॉर्म प्रदान किया जाएगा।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि - श्री सुरेश सोनी, रा० का० सदस्य, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, अध्यक्ष - आचार्य बालकृष्ण, महामंत्री, पतंजलि योगपीठ, विशिष्ट अतिथि - श्री शिव कुमार, अखिल भारतीय मंत्री , विद्याभारती तथा **अतिथि**- डॉ. सुधांशु कुलपति (गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय), डॉ० दिनेश चंद्र शास्त्री, कुलपति (उत्तराखंड संस्कृत विश्व विद्यालय), श्री महेंद्र जी, क्षेत्र प्रचारक (पश्चिमी उत्तरप्रदेश) श्रीमान पदम्, क्षेत्र प्रचार प्रमुख (पश्चिमी उत्तरप्रदेश), श्री भुवन(संगठन मंत्री - विद्या भारती उत्तराखण्ड) एवं 50 से अधिक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयो के प्रोफेसरों ने प्रतिभाग किया। 4 जिलों (रूडकी, हरिद्वार, ऋषिकेश तथा देहरादून) से 204 प्रतिभागी उपस्थित रहे ।

सैनिक स्कूल में नवनिर्मित विंग का उद्घाटन

अनुगूंज कार्यक्रम में हुआ भव्य भवन लोकार्पण, सांस्कृतिक कार्यक्रम व सात्विक फूड जोन का आयोजन

मन्दसौर। विद्या भारती मालवा मंदसौर विभाग के तत्वावधान में सरस्वती विहार शैक्षिक संस्थान संजीत मार्ग मंदसौर में सैनिक स्कूल मंदसौर विंग का लोकार्पण किया गया। इस नवनिर्मित विंग के अंतर्गत म्यूजिक रूम, साइंस कंपोजिट लैब, फिजिक्स लैब, मैथ्स लैब, बायो लैब, लैंग्वेज लैब, एटिएल लैब व नवीन हाईटेक कक्षा-कक्षों का लोकार्पण विद्या भारती के अखिल भारतीय महामंत्री श्री अवनीश भटनागर व मंदसौर के सांसद व भाजपा के राष्ट्रीय सह कोषाध्यक्ष श्री सुधीर गुप्ता ने किया। इस अवसर पर विद्या भारती मालवा के संगठन मंत्री श्री अखिलेश मिश्र, मालवा प्रांत के प्रादेशिक सचिव श्री प्रकाश धनगर, प्रांतीय सदस्य, आईसीटी प्रमुख व समिति के सदस्य श्री राशेष राठौर उपस्थित रहे। प्राइमरी व प्री -प्राइमरी के 500 छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। सात्विक फूड जोन, घर की रसोई का आयोजन भी अभिभावकों व छात्रों द्वारा किया गया। इसमें 3000 से अधिक छात्रों, अभिभावकों, व अन्य लोगों ने भाग लिया।

भारत केन्द्रित शिक्षा: 13 पुस्तकों का लोकार्पण

नई दिल्ली । गोवर्धनलाल त्रेहन सरस्वती बाल मन्दिर, नेहरू नगर में भारत केन्द्रित शिक्षा प्रणाली को क्रियान्वित करने हेतु गहन विचार-विमर्श किया गया और विदयालीन शिक्षा की पाठ्यपुस्तकों के लेखन को दिशा देने के लिए विभिन्न विषयों की 13 पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। विद्या भारती के अध्यक्ष श्री रामकृष्ण राव ने भारत केन्द्रित शिक्षा प्रणाली के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि शिक्षा प्रणाली में प्राचीन भारतीय शिक्षा जैसे- वेद, उपनिषद, रामायण और महाभारत पर आधारित शिक्षा को उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा तक अनिवार्य किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा तकनीकी फोरम के अध्यक्ष प्रो. अनिल सहस्त्रबुद्धे, प्रो. उमेश अशोक कदम सचिव भारतीय इतिहास अनुसन्धान परिषद् दिल्ली, श्री गोबिंद चंद्र महंत अखिल भारतीय संगठन मंत्री विद्या भारती ने भी विचार रखे। श्री रघुनन्दन संगठन मंत्री विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान, श्याम लाल कालेज दिल्ली के प्राचार्य श्री रविकरण, अंग्रेविभाग की प्रोफेसर श्री कुशा तिवारी, विद्या भारती दिल्ली प्रान्त के संगठन मन्त्री श्री रवि कुमार, विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती वीना गोयल आदि उपस्थित रहे।

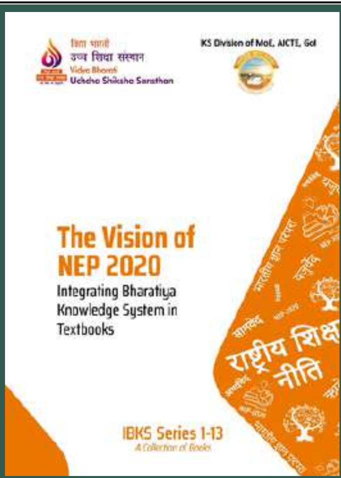

ज्वाला देवी सिविल लाइन्स में सम्पन्न समर्पण कार्यक्रम की झलकियां

इलाहाबाद|ज्वाला देवी सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, सिविल लाइंस, इलाहाबाद में आयोजित कार्यक्रम में अभिभावक, मातृशक्ति, प्रबन्ध समिति, पुरातन छात्र, आचार्य बन्धु भगिनी द्वारा समर्पण किया गया। विद्यालय के व्यवस्था प्रमुख दीपक यादव ने अतिथियों, अभिभावकों एवं पूर्व छात्रों का आभार ज्ञापन किया।

मातृ - पितृ पूजन दिवस

विभिन्न विद्यालयों में 14 फरवरी को मातृ - पितृ पूजन दिवस (झलकियाँ)

''अविराम निर्माणम्'' ई-पत्रिका

विद्या भारती काशी प्रान्त
की मासिक
ई-पत्रिका
'अविराम निर्माणम्'
का
विमोचन हुआ।

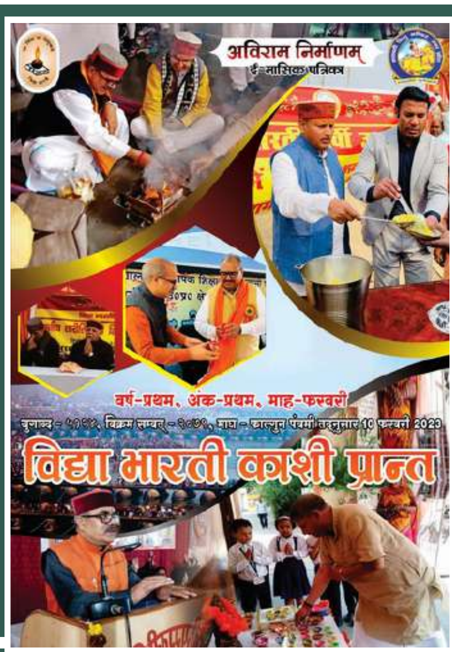

वंदना सभा में कक्षानुसार गतिविधि –शैक्षिक प्रयोग, नारायणा विहार

आशा लखोटिया सरस्वती बाल मंदिर, जी-ब्लाक, नारायणा विहार, नई दिल्ली

वंदना सभा में कक्षानुसार गतिविधि संबंधी प्रयोग

नई दिल्ली | वंदना सभा किसी भी विद्यालय का एक ऐसा दर्पण है जो उस विद्यालय के भौतिक, सामाजिक, मानसिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक वातावरण का साफ़ एवं स्पष्ट चित्र दर्शाता है। विद्यालय के दैनिक जीवन में अनुशासन व एकरूपता का प्रथम पाठ वंदना सभा से ही प्रारंभ होता है। विद्यालय में वंदना सभा में होने वाली नियमित गतिविधियों के अतिरिक्त गत 5 वर्षों से एक विशेष प्रयोग किया जा रहा है। इसके तहत साप्ताहिक व्यवस्था के अनुसार प्रतिदिन एक कक्षा की गतिविधि वंदना सत्र में संपन्न होती है जिसमें छात्र-छात्राओं द्वारा कक्षाचार्य के मार्गदर्शन में तैयार की गई शैक्षिक व सहशैक्षिक गतिविधि जैसे-कविता, गीत, नाटिका, गणित अथवा विज्ञान से संबंधित गतिविधि आदि का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। गतिविधि में कक्षा के सभी छात्रों की प्रतिभागिता रहती है।

उद्देश्य

- शत प्रतिशत बच्चों की प्रतिभागिता से सभी के मनोबल/आत्मविश्वास में वृद्धि करना।
- सामूहिक रूप से कार्य करने के फलस्वरूप अनुशासन, एकता व सहयोग की भावना व धैर्य का विकास करना।
- शुद्ध उच्चारण व अभिनय सिखाना तथा मंचीय कार्यक्रमों में भाग लेने से संबंधित भय समाप्त करना।
- शैक्षिक विषयों को अपेक्षाकृत अधिक रोचक बनाकर अधिगम सुनिश्चित करना।

तैयारी

पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार सप्ताह में एक कक्षा की प्रस्तुति एक बार होती है जिसमें पूर्ण सप्ताह कक्षाचार्य द्वारा उस गतिविधि की तैयारी करवाई जाती है। जिसमें उच्चारण, क्रियाकलाप, अभिनय, शैक्षिक विषयों का अभ्यास आदि से संबंधित बारीकियों पर बच्चों का ध्यान दिलाया जाता है।

विषय वस्तु

शैक्षिक व सह शैक्षिक विषयों से संबंधित गतिविधियों से विषय विकास को बल मिलता है। वर्ष में 5-6 बार विषयवस्तु भी प्रधानाचार्या द्वारा निर्धारित की जाती है। जैसे पहाड़े, विद्या भारती गीत, पाठ्य पुस्तक से कविताएं, सामाजिक जागरूकता संबंधी नाटक इत्यादि। इसके अतिरिक्त आचार्यों को स्वविवेक से गतिविधि का चुनाव करने की स्वतंत्रता दी जाती है।

गतिविधियों के उदाहरण

- **वाद्यों के साथ पहाड़ो का गायन**
- **अंग्रेव हिंदी कविता गायन (पाठ्यपुस्तक से)**
- **समूह गान**
- **गणित संबंधी गतिविधियाँ** e.g geometrical shapes (2D, 3D shapes), vedic maths, definitions, geometrical concepts, basic operations, tables etc.
- सामाजिक ज्ञान संबंधी गतिविधियाँ e.g definitions, state and capitals, fundamentals rights and duties, parts of UNO, Representation of states etc.
- विज्ञान संबंधी गतिविधियाँ e.g body parts and their functions components of food, fibre to fabric, body movements, Living organism and surroundings, Nurition in plants and animals, weather, climate etc.

परिणाम

वंदना सभा में गतिविधियों को प्रस्तुत करने से छात्रों के आत्म विश्वास में वृद्धि हुई, उच्चारण शुद्ध हुआ, मनोबल में वृद्धि हुई एवं सहयोग की भावना का विकास हुआ। जिन विषयों की प्रस्तुति वंदना सभा में की गई उन विषयों से सम्बंधित ज्ञानार्जन सुनिश्चित हुआ।

दो लाख विद्यार्थियों से सेवा कार्यक्रम का संकल्प

श्री सरस्वती विद्या पीठम के स्वर्णिम जयंती अवसर को लेकर हैदराबाद के बंडला गुड़ा रदा धामम में आयोजित पूर्व विद्यार्थी सम्मेलन - दो लाख विद्यार्थियों को सेवा कार्यक्रम से जोड़ने का संकल्प

हैदराबाद | दो लाख से भी अधिक संख्या में " सरस्वती शिशु मंदिर" के पूर्व विद्यार्थियों को सामाजिक सेवा कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु प्रशिक्षण देने का संकल्प विद्या भारती ने लुया है" यह विषय विद्याभारती के दक्षिण मध्य क्षेत्र अध्यक्ष श्री उमा महेश्वर राव ने कही। आगे उन्होंने कहा कि "समकालीन समाज की स्थितियों को ध्यान में रख कर विद्यार्थीयों को एक सुचारू बदलाव की सृष्टि करने वाले के रूप में बदलने का प्रयास और प्रणाली का संयोजन विद्या भारती कर रही है"।

श्री सरस्वती विद्या पीठम के स्वर्णिम जयंती अवसर को लेकर हैदराबाद के बंडला गुड़ा स्थित "शारदा धामम" में आयोजित पूर्व विद्यार्थी सम्मेलन का संबोधन वे मुख्य अतिथि के रूप में कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भारतीय राष्ट्रीय सांस्कृतिक संपदा का ह्रास होने से रोकने हेतु पूर्व विद्यार्थी कार्यरत होना आवश्यक है ।

विद्या भारती के दक्षिण मध्य क्षेत्र संगठन मंत्री श्री लिंगम सुधाकर रेड्डी विद्यार्थयों को संबोधित करते हुए कहा कि "शिशु मंदिर अपने विद्यार्थीयों को संस्कार तथा मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रदान करती है, ये संस्कार आगे राष्ट्रीय भावना का नीव बनते है।"। आगे बोलते हुए उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता के पश्चात अब तक शिक्षा क्षेत्र का भारी नुकसान हुआ है, अब इसे सही दिशा देने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि शिशु मंदिर की शिक्षा व्यवस्था पर जो जहरीला प्रचार चल रहा है उसे सिरे से खारिज करना आवश्यक है।

पूर्व विद्यार्थी परिषद के महामंत्री श्री बोड्डू श्रीनिवास ने "वार्षिक विवरण" प्रस्तुतव किया। उन्होंने कहा कि "अपनी-अपनी पूर्व पाठ शालाओं का आधुनकिकरण हेतु हर संभव स्रोतों का उपयोग लाने का प्रयास पूर्व विद्यार्थीयों किया है। तेलंगाना के राज्यभर से आए पूर्व विद्यार्थीयों के इस कार्यक्रम में मणिपाल यूनिवर्सिटी के चांसलर प्रोफेसर श्री तिरुपति राव ने विशेष अतिथि के रूप में भाग लिए तथा विद्याभारती प्रांत संगठन मंत्री श्री पतक मूरी श्रीनिवास राव, क्षेत्र सेवा प्रमुख श्री कुल्लूर विद्वान रेड्डी, क्षेत्र प्रशिक्षण प्रमुख श्री रावुला सूर्य नारायण, विद्याभारती उच्च शिक्षा संस्थान श्री मुरली मनोहर, पूर्व विद्यार्थी परिषद अध्यक्ष श्री हरी स्मरण रेड्डी, इत्यादि ने भाग लिया। शिशु मंदिर के विद्यार्थीयों द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमें ने सब का मन मोह लिया। सम्मेलन में "भविष्य में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों पर भी चर्चा हुई"।

तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के प्रधानाचार्य वर्ग का आयोजन

श्री सरस्वती विद्यापीठ, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के तहत प्रधानाचार्य वर्ग में दक्षिण मध्य क्षेत्र के कार्यक्रम मंत्री लिंगम सुधाकर रेड्डी द्वारा उद्बोधन।अखिल भारतीय अध्यक्ष दुसी रामकृष्ण राव मुख्य अतिथि थे। दक्षिण मध्य क्षेत्र के अध्यक्ष डॉ. चमर्थी उमामहेश्वर राव और सचिव लक्ष्मण राव सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

सरस्वती शिशु मंदिर के छात्र रहे लक्ष्मण प्रसाद बने सिक्किम के राज्यपाल

सिक्किम|लक्ष्मण प्रसाद आचार्य को सिक्किम का नया राज्यपाल बनाया गया है। वह उत्तर प्रदेश भाजपा के उपाध्यक्ष और विधान परिषद सदस्य थे। वाराणसी जिले के लक्ष्मण प्रसाद आचार्य का भाजपा से बहुत पुराना संबंध है। वे संघ के अत्यंत निष्ठावान स्वयंसेवक माने जाते हैं। लक्ष्मण प्रसाद आचार्य की प्रारंभिक शिक्षा सरस्वती शिशु मंदिर में हुई। वह 1977 तक सरस्वती शिशु मंदिर के छात्र रहे हैं।

आधुनिक खेती के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध किसान श्री सुधांशु कुमार का सम्मान

बिहार|समस्तीपुर के हसनपुर प्रखंड के नया नगर के आधुनिक खेती के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध किसान श्री सुधांशु कुमार को विद्या भारती बिहार ने प्रधानाचार्य सम्मेलन में सम्मानित किया। सुधांशु को भारत सरकार की ओर से **"किसानश्री"** सम्मान मिला है। विद्या भारती की उत्तर बिहार इकाई लोक शिक्षा समिति बिहार द्वारा आयोजित उत्तर बिहार प्रांत में 200 विद्या भारती विद्यालयों के प्राचार्यों के राज्य स्तरीय चार दिवसीय सम्मेलन का शुभारंभ क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री ख्यालीराम, पूर्व क्षेत्रीय सचिव श्री दिलीप ने संयुक्त रूप से किया। लोक शिक्षा समिति के सचिव श्री मुकेश नंदन, एवं सह सचिव श्री रामलाल सिंह आदि उपस्थित रहे। श्री दिलीप कुमार झा ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सभी आयामों के संबंध में प्राचार्यों से विस्तार से चर्चा की तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के महत्व को रेखांकित किया।

कक्षा शिक्षण प्रयोग

भारतीय विद्या मंदिर उच्च विद्यालय नैनसू , ऊधमपुर

भारतीय विद्या मंदिर उच्च विद्यालय नैनस, उधमपुर में कक्षा शिक्षण पर नया प्रयोग किया गया। आचार्य तो कक्षा में पढ़ाते ही हैं, छात्रों को भी कक्षा शिक्षण सिखाया गया। छात्रों को सबसे पहले पंचपद्धति से पाठ योजना बनाना सिखाया गया। आचार्य के सहयोग से छात्र सभी विषयों की पाठ योजना तैयार करते हैं। उसके उपरांत वह विषय-वस्तु के अनुरूप दृश्य श्रव्य साम्रगी, PPT और Activity तैयार करते हैं। यह प्रक्रिया माह के एक सप्ताह चलती है। पूरे वर्ष अनुक्रमांक अनुसार सभी छात्रों को दायित्व दिया जाता है। प्रत्येक छात्र इसमें भाग लेता है और विषयवस्तु से संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए इंटरनेट और पुस्तकालय से पुस्तकों को पढ़ता है। छात्र अपने सहपाठियों से बिना संकोच प्रश्न पूछते हैं। इसलिए कक्षा शिक्षण से पहले छात्र पाठ से संबंधित अन्य जानकारी भी प्राप्त करता है।

यह शिक्षण विधि अपनाने से-

- छात्रों में आत्मविश्वास की भावना जागृत हुई।
- छात्रों में प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न होती है।
- बच्चों ने श्यामपट्ट पर लिखने की विधि सीखी।
- विषय-वस्तु के अनुरूप कविता, गीत, नाटक तैयार करने से छिपी प्रतिभा सामने आई।
- पढ़ाई के प्रति छात्रों की रुचि बढ़ी।
- छात्रों में मूल्यांकन की भावना जागृत हुई।
- अभिभावकों ने भी बच्चों को तैयार करने में अहम भूमिका निभाई।
- विद्यालय के इस प्रयास से बच्चों का सर्वांगीण विकास हुआ।
- कक्षा में आनंदमय वातावरण बना। सभी छात्र प्रसन्नचित होकर पढ़ाई करने लगे।

अभिभावक और बच्चे विद्यालय की ओर आकर्षित हुए।

कक्षाओं में सामूहिक चर्चा

पाठ योजना में सामूहिक चर्चा का एक विशेष स्थान है। विद्यालय में सभी आचार्य सामूहिक चर्चा के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करते हैं और हर पाठ के अंत में आचार्य कुछ छात्रों को सामूहिक चर्चा के लिए कहते हैं। हर समूह का छात्र पहले से तय करता है कि वह किस बिंदु को उजागर करेगा। हर बच्चा अपने समूह में पाठ के विशेष बिंदु को अपने ग्रुप में चर्चा के लिए सामने लाता है। सामूहिक चर्चा में आचार्य कमजोर बच्चों को मेधावी बच्चों के साथ समूह में रखते हैं और हर बच्चे को पाठ के अनुसार अपने विचार व्यक्त करने का अवसर देते हैं। बाद में बच्चों से उनके टॉपिक पर रिव्यूज भी लेते हैं।

विकास:-कक्षा में आचार्य बच्चों को जब सामूहिक चर्चा में शामिल करते हैं तब धीरे-धीरे बच्चे ज्यादा रुचि के साथ कक्षा में ध्यान केंद्रित करते हैं। सामूहिक चर्चा से छात्रों को सोचने, अलग-अलग दृष्टिकोण विकसित करने और अधिक गहराई से अन्वेषण करने का अवसर मिलता है। रिव्यूज रखने में भी बच्चे बिल्कुल हिचकिचाते नहीं है। सामूहिक चर्चा में सभी बच्चों को बराबर बोलने का अफसर मिलता है। इससे उनका मनोबल और भी ज्यादा बढ़ता है।

लाभ:- सामूहिक चर्चा से संचार कौशल, समूह प्रबंधन कौशल, रचनात्मकता, सामान्य जानकारी आदि का विकास हुआ है। बच्चे अब किसी भी कार्य को करने की पहल करते हैं। सामूहिक चर्चा से बच्चों को यह ज्ञान हुआ की विषय का संपूर्ण ज्ञान और अच्छा स्पीकर कैसे बनना है। इसके good listener के गुण भी विकसित हुए हैं। आचार्य बच्चों को कभी-कभी current events पर चर्चा के लिए भी प्रेरित करते हैं जैसे-केंद्रीय बजट, रूस-यूक्रेन युद्ध, महिला सशक्तिकरण, जी-20 आदि। सामूहिक चर्चा के अंत में समूह में से 1-1 बच्चा बिंदुओं को संक्षेप में प्रस्तुत करता है।

सुलेख प्रयोग – ब्रह्मपुरी आदर्श विद्यामंदिर चांदपोल चौका, जोधपुर

जोधपुर | सुलेख का यह प्रयोग छात्रों के साथ किया गया। सभी छात्रों से सुलेख लिखवाया और उन्हें पंजिका बनाकर एकत्र कर रखा तदनंतर इन नियमों को समझाते हुए उनसे पुनः लिखवाया और तुलना की इस प्रकार उनकी रुचि विकसित करें पांचवी कक्षा तक नित्य सुलेख अनुलेख श्रुतलेख अभ्यास कक्षा में एक कालांश द्वारा होना चाहिए छोटे बच्चों को लिखते हुए देखना चाहिए कि वह अक्षरों में मात्राओं को उचित रीति से बनाते हैं या नहीं।

ब्रह्मपुरी आदर्श विद्यामंदिर चांदपोल चौका, जोधपुर में सुलेख का स्तर जानने के लिए समग्र अवलोकन करने की आवश्यकता थी अतः हमने सत्र के आरंभ में ही भैया बहनों से एक कागज पर एक तरफ 8- 10 पंक्तियों का लेख लिखवा कर स्तर का अवलोकन किया। अब उनके आकलन के आधार पर सभी कक्षाओं में सुलेख के नियमों का चार्ट लगवाया गया तथा तद अनुरूप अभ्यास करवाया गया। साथ ही साथ बालक जैसा देखता है वैसा ही लिखता है इस हेतु आचार्यों को भी सुलेख का अभ्यास करवाकर बोर्ड पर सुंदर लिखने के लिए प्रेरित किया गया। सत्र के आरंभ में जो हस्तलेख हमने सभी भैया बहनों का संग्रह किया था अब अभ्यास के उपरांत पुनः उसी पेज पर उस भैया बहन से वही लेखन उन्हें करवाया गया तथा तुलना की गई। इस तुलना में पाया गया कि 225 भैया बहनों में से 200 भैया बहनों का लेख ठीक हो गया। सुलेख के नियमानुसार व्यवस्थित हो गया है तथा उनमें भी 45 से 50 बच्चों का लेख बहुत सुंदर प्रदर्शन योग्य हो गया है।

निरंतर अभ्यास से जब लेख अच्छा हो जाए तब उसका अलग प्रकार के कैलीग्राफी पेन के प्रयोग से कैलीग्राफी लेखन का भी अभ्यास करवाया गया जिससे चमत्कारी प्रभाव भैया बहनों के लेख में अभिभावकों में देखने को मिला। समाज में एक अलग पहचान बनी। प्रांत व क्षेत्र तक एक विशेष पहचान बनी।

एक नव विचार नवाचार को जन्म देता है अतः हमारा मन शुभ संकल्पों व विचारों वाला बने जिससे भैया बहनों को ऊर्जा मिले तथा वे भी कई नई कलाओं के स्वामी बन कर प्रतिष्ठा प्राप्त करते रहें। समय समय पर विद्यालय के सभी बच्चों को सामूहिक रूप से विशेष लेख वाले योग्य जनों को बुलाकर लेखन का प्रदर्शन करवाया गया। जिनमें कुछ पेंटर वह कुछ कलात्मक लिखने

समय समय पर विद्यालय के सभी बच्चों को सामूहिक रूप से विशेष लेख वाले योग्य जनों को बुलाकर लेखन का प्रदर्शन करवाया गया। जिनमें कुछ पेंटर वह कुछ कलात्मक लिखने वाले कलाकार थे उनके लेखनी व कला से भैया-बहन बहुत प्रेरित होते हैं। वह उनका अनुकरण करने का प्रयास करने लगे तथा लेख सुंदर व कलात्मक होने लगा। जिन भैया बहनों के लेख में सर्वाधिक सुधार हुआ है उनको प्रोत्साहित करना भी अन्य को प्रेरणा देता है। फिर तद अनुरूप प्रयास प्रारंभ करते हैं कोई भी कला एक सतत प्रक्रिया है एकाएक कोई कलाकार नहीं हो जाता। निर्धारित निश्चित नियमित अनवरत अभ्यास से ही एक कला का स्वामी बन सकता है सच्चा साधक बन सकता है इससे भी बड़ी बात यह है कि उस व्यक्ति या भैया बहन की उस कला विशेष को सीखने के प्रति श्रद्धा है कि नहीं पता सर्वप्रथम सुलेख की प्रति उनका भाव निर्माण करना परम आवश्यक है। सुंदर लेख निश्चित रूप से सुंदर मान्यवर दे के निर्माण में सहयोगी होता है। अनुशासन में सदाचरण की ओर प्रवृत्त करता है विद्या भारती की एक पहचान हमारा सुलेख भी है उसकी ओर हमारा ध्यान पुनः आकृष्ट होते तो समाज में हमारे विशेष पहचान पुनः स्थापित हो इसी संकल्प के साथ हम सभी प्रयासरत हों।

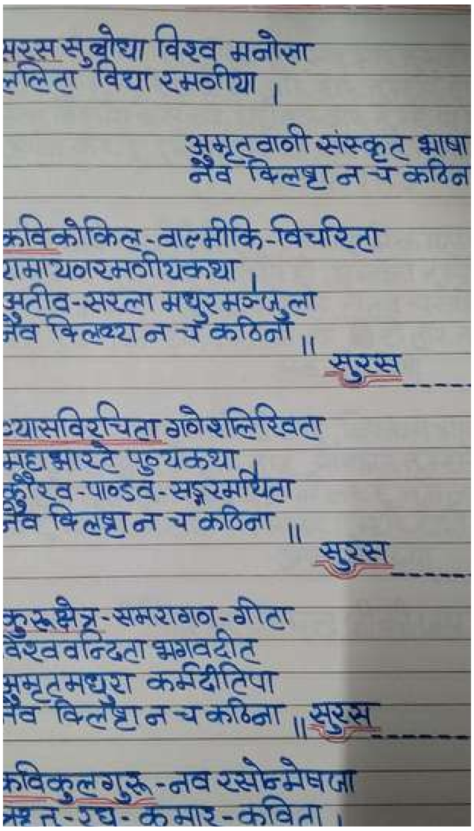

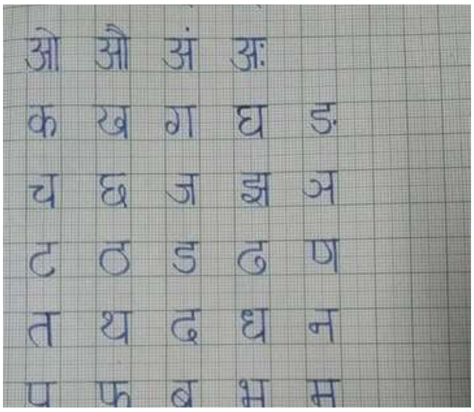

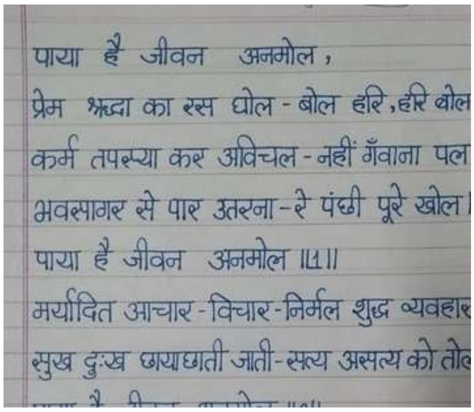

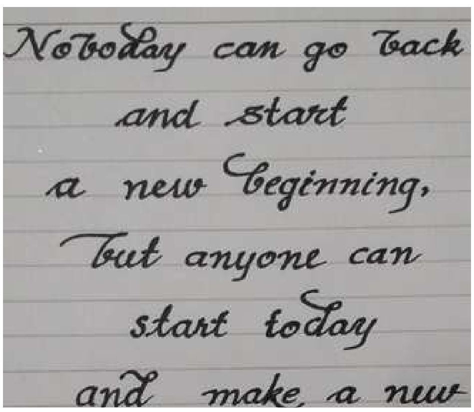

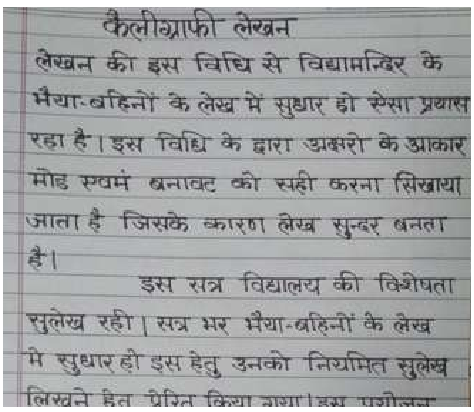

तेलंगाना- राज्य स्तरीय खेल-कूद में VBHS BHEL ओवरआल चैंपियन

तेलंगाना के सिद्धिपेट जिले के तड कपल्ली स्थित श्रीराम आश्रम श्री विद्यारण्य आवास में श्री सरस्वती शिशु मंदिर पाठशालाओं की राज्यस्तरीय खेल-कूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में 33 जिलों के 1150 शिक्षार्थी शामिल हुए। इस दौरान दौड़, कूद, योगासन, कबड्डी, वालीबाल, खो-खो, टेनी काईट आदि खेलों का आयोजन किया गया। VBHS BHEL इस आयोजन के **"ओवर आल चैंपियन"** के रूप में सामने आया। खेल-कूद प्रतियोगिता का उद्घाटन विद्या भारती दक्षिण मध्य क्षेत्र के अध्यक्ष श्री चमर्थी उमामहेश्वर ने किया। विद्यापीठ के अध्यक्ष श्री तिरुपति राव ने ध्वजारोहण किया। सिद्धिपेट जिला परिषद की अध्यक्ष वेलेटी रोजा राधा कृष्ण तथा नगर पालिका अध्यक्ष कड़ी वेरागू मंजुला राज नरसू ने क्रीड़ा ज्योति को प्रज्वलन कर खेल-कूद प्रतियोगिता का आरंभ किया। विद्या भारती दक्षिण मध्य क्षेत्र के सचिव श्री अयाचितुल लक्ष्मण राव ने कहा कि खेलों से शरीर स्वस्थ रहता है।

सरस्वती शिशु मंदिर, टेहरी में कंप्यूटर टीचर ट्रेनिंग सेन्टर का उद्धघाटन, काशीपुर में आधुनिक कंप्यूटर ट्रेनिंग लैब

CSR सपोर्ट से सरस्वती शिशु मंदिर, टेहरी में कंप्यूटर टीचर ट्रेनिंग सेन्टर का उद्धघाटन किया गया। इसका उपयोग विद्यलाय के छात्रों और जिले के aacharyaआचार्यो की डिजिटल लिटरेसी लर्निंग स्किल्स बढ़ाने के लिए किया जाएगा। रोटरी क्लब ऑफ काशीपुर ने 8 विद्यालयों में आधुनिक कंप्यूटर लैब तैयार की है जिसमें प्रत्येक लैब में 10 कंप्यूटर और प्रिंटर लगाए गए गए हैं। इसके लिए नैनी ग्रुप आफ कंपनीज काशीपुर, एसपीएनग्रुप काशीपुर और रोटरी क्लब आफ काशीपुर को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया गया ।

मेघालय शिक्षा समिति का "एडॉप्ट टू एजुकेशन " प्रोजेक्ट

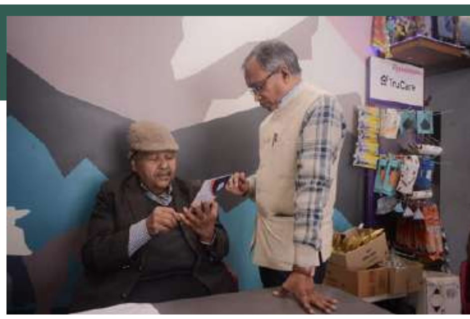

मेघालय शिक्षा समिति की एडॉप्ट टू एजुकेशन प्रोजेक्ट में 40 छात्रों को निम्न व्यक्तियों द्वारा अपनाया गया है:-

- श्री शंकरलाल गोयंका
- श्री बिमल बजाज
- श्री दीपक सुराणा
- प्रो. अयोन भट्टाचार्निट

विद्या भारती मध्य भारत प्रांत का पूर्व छात्र समागम 2023

विद्या भारती मध्य भारत प्रांत का पूर्व छात्र समागम 2023 श्री अवनीश भटनागर अखिल भारतीय महामन्त्री विद्या भारती की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी महती सेवाएं प्रदान कर रहे सरस्वती शिशु मंदिर के पूर्व छात्रों का समागम सभी के हृदय में अपार स्नेह व बन्धुत्व की छाप छोड़ गया। इस अवसर पर श्री भालचन्द्र रावले क्षेत्रीय संगठन मंत्री विद्या भारती मध्य क्षेत्र, श्री निखिलेश महेश्वरी प्रान्त संगठन मंत्री विद्या भारती, श्री वनवारी लाल सक्सेना प्रान्त अध्यक्ष सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान, प्रान्त प्रमुख पूर्व छात्र परिषद मध्य भारत प्रान्त आदि उपस्थित रहे।

सेवा शिक्षा विभाग (संस्कार-केंद्र) संत रविदास जयंती समारोह

दिल्ली | दिल्ली प्रांत के संस्कार-केंद्रों के छात्रओं एवं बस्ती के अभिभावको द्वारा संत रविदास जयंती समारोह का आयोजन 4 फरवरी 2023 को किया गया। इस वर्ष 69 संस्कार-केंद्रों द्वारा संत रविदास जयंती के कार्यक्रम संपन्न किए गए, जिसमें 513 छात्र, 818 छात्राओं एवं अन्य 376 संख्या सहित कुल 1707 संख्या रही। इसमें महेंद्र एंक्लेव विद्यालय की रेलवे क्रॉसिंग आजादपुर बस्ती में 8 पूर्व छात्रों से संपर्क किया गया एवं वसंत विहार विद्यालय की प्रियंका कैंप बस्ती में 25 परिवारों से संपर्क किया गया।

पोषक ग्रामों एवं पोषक वार्डों में संत रविदास जयंती मनाई

सागर । सरस्वती शिशु मंदिर पगारा मार्ग सागर के आचार्यों द्वारा टोलियां बनाकर पोषक ग्रामों एवं पोषक वार्डों में संत रविदास की जयंती मनाई गई। इसमें ग्राम पगारा, ग्राम बिहारीपुरा, ग्राम पृथ्वीपुरा, ग्राम पथरिया हाट, ग्राम पाटन, ग्राम जरारा, तथा पोषक वार्डो में रामनगर वार्ड, शारदानगर, सुभाषनगर एवं शास्त्री वार्ड में संत रविदास की जयंती मनाई गई। ग्राम भैंसा में संत रविदास के चित्र के समक्ष पूजन कर नारायण प्रसाद कबीर पंथी एवं प्राचार्य प्रवीण जोशी ने आचार्य परिवार के साथ पुष्पांजलि अर्पित की। मुख्य अतिथि कबीर पंथी ने कहा कि संत रविदास का जीवन सभी के लिए प्रेरणादायी एवं अनुकरणीय है। मनचंगा तो कठौती में गंगा की व्याख्या कर समरसता का भाव संत रविदास ने जगाया।

विद्या भारती सिक्किम की कार्यकारिणी बैठक

सिक्किम|ताडोंग के राज्य कार्यालय में आयोजित विद्या भारती सिक्किम की कार्यकारिणी बैठक की अध्यक्षता विद्या भारती सिक्किम के अध्यक्ष श्री चुलतीम भूटिया ने की। बैठक में गत वर्ष की समीक्षा एवं सत्र 2023 की वर्तमान स्थिति शैक्षणिक, विद्यालय, विद्यार्थी, संगठन, क्षेत्रीय वार्षिक बैठक, सत्र 2022 आय-व्यय, प्रांतीय कार्यालय सहमति, वार्षिक पत्रिका आदि पर चर्चा हुई। विद्याभारती सिक्किम के समन्वयक श्री मोहन शर्मा, कार्यालय सचिव श्री सूर्या ढिटाल आदि ने विभिन्न विषयों पर चर्चा की। विद्या भारती पूर्वी क्षेत्र के संयुक्त सचिव श्री पार्थ घोष ने बताया कि गांवों और बस्तियों तक कैसे पहुंचा जाए। विद्या भारती सिक्किम के पदाधिकारियों ने सिक्किम के नवनियुक्त राज्यपाल श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य से शिष्टाचार भेंट भी की। बैठक में विद्या भारती के संयुक्त सचिव श्री पवित्र दहल और विद्या भारती सिक्किम के अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

3 दिवसीय शिशु वाटिका शिविर, परसाला, केरल दक्षिण क्षेत्र

सिक्किम सिस्टर और विद्या भारती सिक्किम की ओर से राजधानी गंगटोक में राष्ट्रीय स्तर के सम्मान समारोह का आयोजन

सिक्किम सिस्टर और विद्या भारती सिक्किम की ओर से राजधानी गंगटोक में राष्ट्रीय स्तर के सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। श्रीमती पवित्रा दहल, अध्यक्ष, सिक्किम बीर गोरखा पूर्व सैनिक कल्याण संघ, विद्या भारती, अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के राष्ट्रीय सह मंत्री, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं।

शिशुवाटिका अखिल भारतीय परिषद बैठक एवं प्रशिक्षण

शिशु वाटिका की वर्तमान आवश्यकताओं तथा स्वरूप की दृष्टि से चिन्तन एवं आगामी योजना के लिए शिशुवाटिका अखिल भारतीय परिषद बैठक एवं प्रशिक्षण का आयोजन दिनांक 18 फरवरी से 22 फरवरी 2023 तक विद्या भारती शैक्षिक शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, (अक्षरा) भोपाल, मध्यप्रदेश में किया गया। बैठक में शिशुवाटिका के अखिल भारतीय संयोजक/सह संयोजक तथा क्षेत्रीय संयोजक/सह संयोजक एवं विशेष आमंत्रित सदस्य उपस्थित रहे। शिशुवाटिका के अखिल भारतीय प्रभारी श्री गोबिंद महन्त (अखिल भारतीय संगठन मंत्री) एवं अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य श्री काशीपती का पूरा समय सानिध्य प्राप्त हुआ।

सुश्री आशा थानकी अखिल भारतीय शिशुवाटिका संयोजिका ने प्रस्तावना प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं के तप-तपस्या के कारण विद्या भारती की शिशु शिक्षा (शिशुवाटिका) आज पूरे देश में प्रचलित होने जा रही है। अतः अब इसे राष्ट्रीय शिशु शिक्षा भी कह सकते हैं। अतः अपनी सोच को राष्ट्र के निमित्त विस्तृत करना होगा। शिशु शिक्षा, आचार्य शिक्षा/प्रशिक्षण, शोध और प्रकाशन के विषय में स्वक्षेत्र से अखिल भारतीय स्तर तक विचार करने की आवश्यकता है। गत बैठक की कार्यवाही का पठन विद्या भारती अखिल भारतीय शिशुवाटिका सह संयोजक श्री हुकुम चन्द भुवन्ता ने किया।

श्री श्याम मनावत (कथा वाचक, समर्थ शिशु श्री राम कथा) ने अपने आशीर्वचन में संगठन के घटकों की तुलना पृथ्वी, पौधे की जड़ और फूल से की। जैसे जड़ पृथ्वी से गंध लेकर सुगंधित फूल को मुखरित करती है ऐसे ही संगठन के अंगभूत घटक हवन की समिधा हैं जो हवन में जाकर अग्नि बन स्वाहा हो जाते हैं।

बैठक में क्षेत्रीय वृत्त प्रतिवेदन किया एवं अपनी प्रयोग भूमि के विशेष प्रयोगों को भी पावर प्वाइंट के द्वारा प्रस्तुत किया गया। सुवर्णप्राशन के विषय में श्रीमती हीना बेन ठुम्मर, समर्थ शिशु श्रीराम कथा के विषय में श्री भुवन्ता जी, बाली विद्यालय के विषय में श्रीमती चालीसा बेन और शिशुवाटिका प्रशिक्षण केन्द्र गांधीधाम के विषय में श्री जयेश भाई ने वृत्त प्रस्तुत किया। प्रशिक्षण केन्द्र के अनुवर्ती कार्यो को भी क्षेत्रीय प्रमुखों के द्वारा बताया गया। प्रशिक्षण में मुख्य विषय - भारतीय जीवन दर्शन, भारतीय शिक्षा दर्शन, भारतीय मनोविज्ञान एवं पंचकोश आधारित मूल्यांकन रहे। चिल्ड्रन यूनिवर्सिटी के पूर्व नियामक, श्री दिव्यांशु दवे ने क्रमशः 2-2 कालांश में इसे बड़े सहजता और सरलता से समझाया। एन.सी.एफ के अनुसार पाठयचर्या निर्माण के विषय को अखिल भारतीय शिशु वाटिका सह संयोजिका श्रीमती नम्रता दत्त ने समझाया और इसका अभ्यास भी करवाया।

शिक्षक शिक्षा का विषय लेते हुए अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री गोबिंद महंत ने कहा कि एन.सी.एफ. 3 से 8 वर्ष अर्थात् कक्षा 2 तक के लिए पंचकोशात्मक विकास पर आधारित बना हैं। यह पंचकोशात्मक विकास 12 वीं कक्षा तक जाएगा। अतः शिक्षक शिक्षा (बी.एड, डी.एल.एड.) में भी इसे जोड़ना पड़ेगा। दिनांक 20 फरवरी 2023 को मध्यप्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री इन्द्र सिंह परमार भी वन्दना सत्र में उपस्थित रहे। दोपहर को एक शैक्षिक गोष्ठी का आयोजन राज्य शिक्षा विभाग द्वारा पतंजलि सभागार में किया गया। गोष्ठी में मुख्य मार्गदर्शन श्री दिव्यांशु दवे का रहा। स्थानीय शिक्षा अधिकारी एवं शिक्षक भी इस गोष्ठी में उपस्थित रहे।

श्रीमती आशा जी ने वर्ग की समीक्षा की और कुछ विशेष (सोशल मीडिया से सम्बन्धित) निषेध बातों पर भी मार्गदर्शन दिया। समापन सत्र में श्री गोबिंद चंद्र महंत ने कहा कि भावी पीढ़ी के निर्माण का कार्य शिक्षा ही करती है और शिक्षा का प्रारम्भ शिशु से ही होता है। अतः शिशु शिक्षा का संस्कारित होना अनिवार्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने यह अवसर प्रदान किया है। जब तक नीति 2020 मूर्त रुप न ले ले तब तक अथक कार्य करना है। राज्य अपनी व्यवस्था के अनुसार 2023 में कार्य योजना बनाएं। शांति मंत्र के साथ बैठक समाप्त हुई ।

विद्या भारती के गौरवपूर्ण क्षण

डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' देवपुत्र गौरव सम्मान से सम्मानित

इन्दौर। प्रख्यात बाल साहित्य-कार डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' को शाहजहाँपुर उत्तर प्रदेश से प्रकाशित प्रसिद्ध मासिक बाल पत्रिका देवपुत्र द्वारा प्रतिष्ठित देवपुत्र गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप डॉ. नागेश पांडेय को 35 हजार रुपये, मानपत्र, शाल एवं श्रीफल प्रदान किया गया। समारोह की अध्यक्षता प्रदेश के स्कूली शिक्षा मंत्री श्री इंदर सिंह परमार ने की।

कार्यक्रम के विशेष अतिथि और मुख्य वक्ता विद्या भारती के अखिल भारतीय मंत्री डॉ. किशनवीर सिंह शाक्य रहे। प्रधान संपादक कृष्णकुमार अष्ठाना, पत्रिका के संचालक सरस्वती बाल कल्याण न्यास के अध्यक्ष डॉ. कमलकिशोर चितलांग्या ने भी विचार रखे। संचालन कार्यकारी संपादक श्री गोपाल माहेश्वरी ने किया। इस अवसर पर प्रबंध न्यासी सीए राकेश भावसार, कोषाध्यक्ष श्री मोहनलाल गुप्ता, प्रबंध संपादक श्री शशिकांत फडके, प्रांत संगठन मंत्री श्री अखिलेश मिश्र, श्री अम्बिकादत्त कुंडल, विद्या भारती के नगरीय शिक्षा प्रांत प्रमुख श्री पंकज, प्रादेशिक सचिव श्री प्रकाश धनगर, मध्य भारत प्रांत के नगरीय शिक्षा प्रांत प्रमुख श्री राम भावसार आदि उपस्थित रहे।

आजादी सेटेलाइट 2.0 की लॉन्चिंग की साक्षी आगरा की छात्राएं

विद्या भारती के संत गणेश राम नगर सरस्वती शिशु मंदिर की 14 छात्राएं इसरो उपग्रह प्रक्षेपण की बनी गवाह

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन इसरो (ISRO) ने एक बार फिर से 10 फरवरी को आजादी सेटेलाइट 2.0 लांच किया। इसमें आगरा के बलकेश्वर स्थित गणेश राम नगर कन्या विद्या मंदिर की 14 छात्राओं को बुलावा भेजा गया। जिसके लिए छात्राएं आगरा से रवाना हो 10 फरवरी को होने वाली लॉन्चिंग में शामिल हुई। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती चारु पटेल, अटल टिंकरिंग लैब की अध्यापिका श्रीमती रूबी अग्रवाल और शुभा गुप्ता के संचालन में छात्राओं के आजादी सैटेलाइट 2.0 के लिए सेंसिंग एवं इलेक्ट्रॉनिक युक्ति का निर्माण किया। कई महीनों के प्रयास एवं परिश्रम के बाद 10 फरवरी को छात्राओं के सहयोग से निर्मित युक्ति को आजादी सैटेलाइट 2.0 में इंटीग्रेट करके भेजा गया।

विद्या भारती की उपलब्धियां

सरस्वती शिशु मन्दिर विन्ध्यनगर के छात्र लक्ष्मी नारायण अग्रहरि बने एस.डी.ओ.(झारखण्ड)

सरस्वती शिशु मन्दिर उ.मा. विद्यालय विन्ध्यनगर से वर्ष 2013 में उत्तीर्ण छात्र लक्ष्मी नारायण अग्रहरि झारखण्ड पब्लिक सर्विस कमिशन के कम्बाइन्ड इंजीनियरिंग सर्विस परीक्षा से एस.डी.ओ. पद पर पी.डब्लू.डी. विभाग में नियुक्त होकर विद्यालय का नाम रोशन किये हैं।

आगरा के पूर्व छात्र रोहित तिवारी ने बनाया विश्व रिकॉर्ड

सरस्वती विद्या मंदिर कमला नगर आगरा के पूर्व छात्र पर्वतारोही रोहित तिवारी ने अफ्रीका महाद्वीप की सबसे ऊंची छोटी माउंट किलिमंजारो को फतह किया और 19,341 फीट उंचाई पर -15 डिग्री तापमान में 53 सूर्य नमस्कार कर विश्व रिकार्ड बनाया। 1 जनवरी 2023 को प्रात: 7:35 बजे रोहित तिवारी ने यह उपलब्धि प्राप्त की। रोहित तिवारी पहले भारतीय है जिन्होंने माउंट किलिमंजारो पर सूर्य नमस्कार किया और इसे पूरे विश्व ने देखा। रोहित का नाम India book of Records, Asia book of Records और World record of India में दर्ज है। उन्होंने, गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड के लिए application दी है। रोहित तिवारी ने प्रारंभिक शिक्षा सरस्वती विद्या मंदिर कमलानगर आगरा से ली है।

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

प्रज्ञा सदन, जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर,
नेहरू नगर, महात्मा गांधी मार्ग,
नई दिल्ली - 65

@VidyaBharatiIN

www.vidyabharti.net ।
www.vidyabharatisamvad.com

ई-मेल : vbabss@yahoo.com ।
vbsamvad@gmail.com
फोन: 91 - 11 -29840013, 29840126, 20886126

सेवा में,